



१ गङ्गादह ॥ १ ममि ॥ १ हिंयेम ॥
 १ धानावग ॥ १ गवदुन्ने ॥ १ मसमनका
 १ जल ॥ १ नर्ग ॥ १ सञ्जवा
 १ सिखिनि ॥ १ नडावोद ॥ १ हाननिद
 १ सिमकि ॥ १ सागियल ॥
 १ दकिमसान ॥ १ थिमदुड ॥
 १ कोडमल ॥ १ येनोम ॥ १ अशिय
 १ दूवानकि ॥ १ नयति ॥ १ नोवय
 १ कालव ॥ १ मतिनाथि ॥ १ वसुन
 १ यथा ॥ १ मरुवोद ॥ १ वायव
 १ गवता ॥ १ किमन ॥ १ पुनायन
 १ वबना ॥ १ नमुनुनी ॥ १ केगव
 १ कोरति ॥ १ कोदिनि ॥ १ पुनरेनव
 १ यथानि ॥ १ सुगोयन ॥ १ वनोस
 १ कोनिसे ॥ १ कोवाका ॥ १ मई
 १ सवमालि ॥ १ दुलव ॥ १ वयिनो
 १ यलया ॥ १ दुलोयो ॥ १ सु
 १ नासापिना ॥ १ यग ॥ १ कि
 १ नवदुडा ॥ १ कुकवरु ॥ १
 १ कयमादुडा ॥ १ मशसनाकि
 १ कमालिद ॥ १ ममियन ॥ १
 १ ककया ॥ १ मक ॥ १

ममि
 ममि
 निवदि
 ममि

ममि
 ममि
 ममि
 ममि

ममि
 ममि
 ममि
 ममि

१ वडकाय विधि ॥
१ यथैमादाकान्या ॥

१ जलपत्र ॥

१ मेरुमले ॥

१ यमचयदिनि ॥

१ लोड्याग ॥

१ नैमाकवचि ॥

१ देवालादि ॥

१ मायना ॥ १ वडलादि ॥

१ यथैमादा ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ मेरुमले ॥ १ लोड्याग ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ दलदि ॥ १ नैमा ॥

१ यथैमादा ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥

१ यमचयदिनि ॥ १ यमचयदिनि ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

स्थवलिखवना ॥ ॥ वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो ॥
वमनीयपिचुखा ॥ ॥ वलिखवना ॥ ॥ गानायक ॥ ॥ नवायमधुनायलिनीजाना ॥
मिमधुल ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो ॥
वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥ ॥ लामायनायक ॥ ॥
वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥ ॥ वलिखवनायक ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वलिखवनायक ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥ ॥ गडय
विद्वकात्रजनिविनसिमागानेवितायामुखामगमययुक्रखधान ॥
गडयविनिनीयानात्रमदसुमिषायमिगिरुगविदिनाः ॥ गडयविउ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥ ॥ गडयविनिनीयानात्रमदसुमिषायमिगिरुगविदिनाः ॥ गडयविउ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥ ॥ गडयविनिनीयानात्रमदसुमिषायमिगिरुगविदिनाः ॥ गडयविउ
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो ॥ ॥ गडयविनिनीयानात्रमदसुमिषायमिगिरुगविदिनाः ॥ गडयविउ

इंजोहं ॥ वलिकविद्याना ॥ ॐ नमो भगवते ॥ यद्येवाद्यं नमः ॥

॥ ॐ नमो न्या नृगता सर्वधर्माः ॥ यत्र स्यात्तानृगता सर्वधर्माः ॥ दवय
माने समययमाने गङ्गा वचयत्रयमाने ॥ नमनस्य नरुयत्रना
दद्याममानगदुदुना ॥ ॐ नमो भगवते विद्याया ॥ ॐ नमो भगवते
वेदा ॥ वेदा नमो किनी ॥ सयमेस सर्वस्यदा ॥ ॥ वलिसययान्यास ॥

॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥

ॐ

रुगयगविगायामादायमानाकि न्यादयय ॐ मवलिगृह्णन्तु सम
यनक्रन्तुसर्वसिद्धिमयय ॐ न्ययथ ३ गथेनयथ ४ रुद्र ३ थं डिद्यथसा
नि कर्म थं ममसर्वसत्त्वानां च ३ सर्वकान्त ग या सत्त्वयवद्वयसत्त्वोय
कान्तरवक्रुहं रुद्रुसाह ॥ सर्वकामिकवलि ॥ २ ॥ ॐ द्यादिवडिम
रुद्रवसद्योगमवगृह्णन्तु वलि विविहिय रुद्रियमममम रुद्रियविवायु

धनाधियोगिष्ठ ॥ ॐ मानरुगाधियनिष्ठ दवाडि च न्याकियगामरु
दे ॥ यदवा समस्तारु विरुचनागाधनाधनागुष्ठगाले ॐ ममस्त
यगिरुच्ये के निवेद्यय ॐ सकस्य कोहयेवदि ॐ मरुता १ गृह्णन्तु द्वा
मग ॥ १ मयगुगाने १ रुद्रने १ ममस्त ॥ यथुवलि धूपवलि विरुचनय १
गृह्णन्तु रुद्रुयिवन्तु यदुष्टु दव कर्म सरु लयुग रुद्रुसाह ॥ ला क

यानवलि ॥ ७ ॥ उ नमो नमः याया वरु वरु या नय वरु नम हा को धा
यम हा हा कट रोन वाय अमिम मन यन वरु यास गृहिन रुता यरु म
ग क छु लिख शखादि र गिष्ठ शव ध शहन शय वरु शर्क र विमृष्ट यरु स
वि विष्ट विनाय कानां मा हा ग ग य गि की नी ध का नाय रुं शरु ठरु खाल ॥
दि रु वलि ॥ ७ ॥ उ ओ ४ सर्व य व ग द हा दि ग लो क धा नु न न न ग र

हा

हा समुद्र मय धा रु य स नु सै य न मान न जाय म म ध ल या ला न ग ग स मा
व र्णा व लि ना व र्मा या पु स म व हा न हा का हा धा नु य र्था व र्णा हां ४ ॥
४ ॥ उ ओ ४ सर्व य व ग द स दि ग लो क धा नु न नै ग ग ग स म द य रु
य ग न हा ग ग हा स मा ला क या ला स र्व स र्व स त्वा ना ग्ना ॥ न य र्था ॥ उ व
जाय व मा या व रु व जान ल व रु कान व रु ना रु स ना ग व रु व रु नि न

ॐ

नमो नमः

नमो नमः

गन्धयुष्यधपदीयवाक्तरैयौदकामंदैयवागनयसवत्रिवाननीध
थीन्मवसिगुद्रुनुखादनुयिवनुडा४हंवकासगुदौममसर्वमत्वांन
वहभक्तिनडांकुनरुयिंयनूवनुहंरुटवउधनकोइयायानिखा
हा॥कनयानवल्लि॥४॥॥इनभायावउमहाकाजायवर्द्धसास
नेनाकाकाय॥इंशाकोहंरुटमयमीसयुष्यधपनकनानयागानुऊ

धनागदवयननाकमगुद्रु२००दंवल्लिहाकाहंखादि२ख२हंउ४हं
महाधुदासगु२ककवधुयकी४हंरुटखाहा॥महाकालयलि॥
१॥॥इंनोहं४हो४नाहंकाजागिचदुसय्यवर्द्धमहेलठुकुवुद
यनिकउहानिधनय४२००दंवल्लिगन्धययधधयदियदुगदममि
दिगयागयसपेतिवागौनीधायीआगकुर२००दंवल्लिगुद्रु२

[illegible][illegible]

वजाः मासिके भृशनिर्घेवः ताजाद्वीगथसकृसिः व
ज्रभ्रवलयालेपनाः महाभ्रवनागर्थेवचः महाकाली
चहुगचः वज्रहुलिगथसपजाः गूपासिचत्रपासिचः
वज्रपातिमाहावजाः वज्रमाजामाहाविद्यागर्थेव
मृगशुलीः अपजाजिगमहाद्वीकालकाक्षि

माहावलाः गथसधन्यामाहालगपमशुलील्य
वचः पूष्यदकिमनिन्दस्यर्हकभिधपिजजाः म
हनजागथसद्वीधन्याधेविचूत्मालीनीः जाकु
कः जगाचेवः वृद्धाऊगिकनापीकाऊँ आः हूँ हूँ
स्वाहा ९ ५ ५ ५

ॐ विद्यामकायमहाकोक्षयः महावज्रपद्माक्रमं
देवलिङ्गं २ ख २ खाहि २ ममसर्वविद्यान्तः ॐ
२ रुद्र २ अय २ दह २ पक् २ मय २ ॐ आ विद्याम
कायहं रुद्राहा १० ॐ वज्रयागिनी दीनृः
खं २ रुं २ ॐ ३ ममसर्वमिद्विषयकं ॐ देवलि

गृह २ रुं २ रुद्र २ खाहा ११ ॐ पिप्पविपूर्वव
लिमर्वापदुवनाभिनिमर्वाजागपममयः सवर्हय
विनाभिनिर्देवलिः गृह २ ख २ खाहि २ सर्वदु
ष्टमाजानाः माजय २ गृह २ वध २ हन २ पंच २
माजय २ रुं २ रुद्र २ खाहा १२

27/2

ॐ सर्वजगज्जगत्सु भुगपतपिठम् वात्माया ॐ
देवलिगृह २ सिद्धिकृष्णम् नीकृष्णम् नीकृष्णम्
जुधजगद्वापनिष्ठम् १३ ॐ श्रीं नीलवज्रि
मृतसंकासः धाजयद्वयस्यावहदुर्ध्वकम् विष्णुपा
ऊः ऊषयायवृहयहः ॥ देवलिगृह २ पक्क २

स्व२श्वाहि२भुंज२विघ्नहर्जवप्रपूयनःकलि
प्रतिगृह्ण२क्षी२रुंरुद्रस्वाहा १४ ओंआरुंवज्रया
गितिप्रतिऊर्ध्वदंवलिकिंरुंरु४रुःहैरुद्रमम
४भानिकूपूस्वाहा १५ ओंश्रीरुगूकमहावज्रकंधु
प्रयस्यय२वध्व२नाषय२सर्वंगकगकीर्तिना

क्रदयहं २ ह्रद् औ वृद्धदाकिनिप्रतिच्छं दैवलि
हं २ ह्रद् स्वाहा १६ औ ख २ खाहि २ गृह २ गृह
नुसर्वाहिनिकायं दैवलिहं ह्रद् स्वाहा १
औ आः कौद्रिसकलगधविजोविजस्वलिनापिपिक
जैः अश्वनज २ अवनजं तु यथादि लोकपायं

दैवलिगृह २ हं स्वाहा १७ औ आवजवृकं दै
वलिगृह २ ख २ खाहि २ ममममी पूष्टि कुस्वा
हा १८ औ सर्वज कुपिष्ठ वायः जाकुष्ठ किनजा
ष्ठः सर्वमनि कुस्माना चक्षुः शुक्लं हः नामय
२ महकाजायः काजपूपायः मह हयाः नकाय

हिनर्तः दम २ दमय २ नामय २ सर्व दुष्ट मत्त्वानां
मूधयगना अधिपनयः नयय २ नामय २ गाप
य २ ह २ कन २ षण २ हण २ कन्य २ ह २ ह
न २ दह २ पंच २ मथ २ मनय २ घाग २ य २
शका (धो) हं हृ ह्वा हा १९ डॉनमाष्ट्राय

कपूना रासिन हृदयाय पनात्मा विहाय र्धधु
कमूर्धुय मत्त्वानां दुः खकय कापिन्य २ हृद्वलि
दिव्यमधुलस्यपनं दुपभुजमां मत्त्वानां नृक जाया
मम्यर्क (धो) पतिष्टापनाय डॉ आसूगने वज्रदु
यहाः हं हृ ह्वा हा १९ डॉ हं हाः आका २ वायुग

जडुयकपृथिविसाचिद्यसपविवाजयः ॥ इदं वलि
 गंधयुयु चूपारिपमऊगयसामिनेचाजगः सप
 लीवाजयः ॥ इदं वलिगुद्रगुषायगुपिवीगुभुजः
 ऊं वहाः सगुफोममसवसत्वा नचि० मिद्रुवजडा
 वजनगुफिद्रुव्वगुऊं ह्रद्र ह्या हा २०

हा ॥ इद्रिययकवलिद्रुवलि २१ ॥ इदं नमारुगवयगुद्रमा
 गिके सर्वगुद्रनद्रुगुयनातनिमविवननामयद्रादिरुय
 ययसमेनागडवा नादिरुयविद्रुवलिनिरुगवतिगुद्रमागिके
 सर्वगुद्रनद्रुद्रियोरि ॥ इद्रिययकवलि २२ ॥ इदं वलिगुद्र २३ ममसव
 विद्रुवानुद्रन २४ ममिपुद्रिययकवलि २५ ममसव २६ ममसव २७ ममसव २८ ममसव २९ ममसव ३० ममसव

[illegible]

॥ सर्वभूतहृदयद्वारा सय २०० मंत्रानि गुरुस्वरखादि २ म म सर्व
सत्त्वानां कर्मनिर्णयकं नृपतिं केन दानयुक्तं नृपतिं दानयुक्तं नृपतिं
कनकं ३ रुट्टयादा ॥ मानि विवलि ॥ २७ ॥ ॥ वैष्णविकि
उविष्णुनि वलि माला सीयुर्ध्व ॥ ० ॥ थन वसुधा गदायक ॥
॥ उ न क व क र्म र्म न वा प र्म न क द न ग र्म र्म म या र्म य ०

क्रुणुं न्यागमनविममन ॥ १ ॥ शउनरुदगनरुदमामानंठमदि
 विममनगठरुदगनरुदमामानंठमदि ॥ २ ॥ रुद
 कलाविरुसीनदानीनविनायक। चामधु। धानविरुसीन
 मादवीरुसीनरुदमामानंठमदि ॥ ३ ॥ रुद
 नाडिना। रुदकालीमरुका। लिहृत्कालीनयागानि ॥ ७ ॥

रुदवीरुसीनरुदमामानंठमदि ॥ ४ ॥ रुद
 विममनगठरुदगनरुदमामानंठमदि ॥ ५ ॥ रुद
 रुदवीरुसीनरुदमामानंठमदि ॥ ६ ॥ रुद
 रुदवीरुसीनरुदमामानंठमदि ॥ ७ ॥ रुद
 रुदवीरुसीनरुदमामानंठमदि ॥ ८ ॥ रुद
 रुदवीरुसीनरुदमामानंठमदि ॥ ९ ॥ रुद
 रुदवीरुसीनरुदमामानंठमदि ॥ १० ॥ रुद

७

नागवज्रव्यापीयसुधा। नथानमदाकायनिनरुनयाग
हृदि॥ ८ ॥ ॥ ॐ देवजन्मनि ४५ वीर्यकावाक ४ सर्वमिदं
नाडिकं शकदं नख रवधन रख रख दन रघ रघाटय रज्जु मकस
सुषुप्त्यनाह्मनि स्रसि कृत्तुं दं दं रुट ३ खादा॥ ९ ॥ काय
कंगय॥ ० ॥ ॥ ॐ देवास्ते सर्वे उजंगमसिद्धा ४ गाका सर्वधर्मक

टयगनाश्च गायत्रयका ४ गुरुजा नयथियक विरुसो निवसनि
या॥ १० ॥ नेत्यकजा नष्ट थिबीन नदी दंगा ३ ला विज्ञायया
मिनास्तु सद्वृत्तदाना सत्ते देन सद्य ४ कला ०० रुद्रु जेन देवका
र्थ॥ ११ ॥ ॥ यमनष्ट निवसनि रगायन नदनयसनायत्रयादय
नत्रविमल्लेष॥ नगनेष्यवसनि॥ १२ ॥ सनीन सद्यै सुं ४ व

स्वाहा ॥ १० ॥ दानयनं स्वादि × ॥ मध्वधवावलियुननार्थन
ननक्रांकनरुटस्वाहा ॥ ० ॥ वलिसमर्जितार्थदेहा ॥
यथेनास ॥ यथमो अकानमषदक्षिण ॥ ॥ धनस्वययडा ॥
इति ॥ उच्यते ॥ यथमो अकानमषदक्षिण ॥ ॥ धनस्वययडा ॥
॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥

मन्त्राणां कननाद्वयं । दित्वा दृढं नित्यं यत्किं मुखे वा नित्यं मवावृत्तं
त ॥ ३ ॥ तद्यथा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥
॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥
॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥
॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥ ॥ धनस्वययडा ॥

मध्यमस्थितिके ॥ खाननन ॥ सुग ॥ इति माध्याह्नमाय ॥ ४३ ॥
रुद्रगोवकीच ॥ अथ नमनमायक ॥ वाठभक्तमानकादरुद्रविदुक्त
रुद्रिभक्तिके ॥ वृद्धकायननं सानं सर्वस्य निरुक्तिके सवाविदुक्त
ननार्थविना विधेयनमीरु ॥ १ ॥ यद्वदकायनीदवी इति सानि

१०
विदुक्तिके ॥ यद्वदकायनीदवी वदकायनिनमीरु ॥ २ ॥ इति
मादुक्तिके दवी सनवद्विनायनी गीरुक्तिके नमीदवी मादुक्तिके
निनमीरु ॥ ३ ॥ यद्विभक्तिके रुद्रा नमीगदमादुक्तिके
समी ॥ कृत्स्नवदुक्तिके वद्विनायनिनमीरु ॥ ४ ॥

दिक्कित्तवागदिदवीद्यावर्षीकसदृशा। त्रकवर्ष्यचरिखर्नं
नमामुमवागदिदवी॥ १७ ॥ अथिवाकोमानोवमयत्रका
नित्तिविनि॥ त्रकवर्नसकैकिदरुं नमामुमकोमानिनी॥
४ ॥ नमोतवीमृवीदविष्णामवर्षीनृजसनी। सवचकधनादया
नानानीनहुरु॥ १ ॥ वायुवायाम्वादिवातिरुमात्रधसनी

याककात्रमृक्किषानिनी। स्वमरुसं नमामिदी॥ ८ ॥ अथमनेव
धीकादवाधूमवर्ष्ययज्ञाना। कदिमृदधनं दवीमरु। अथिनि
मामुग॥ ९ ॥ उं नमो। एलवायुसरुका। लायीनर्ण। सवीरु। वि
यि किनाधनेकृद्वर्ष्यविन्दुयाग। उमत्रखर्वांगधने। करुविद्वज्जी
नलीरुं गडिचमविद्वरुवनी। दादरुनधुवनत्रककवर्ष्यनवी॥ १० ॥

ब्रह्मसूत्रं ध्यात्वा वा अथ विद्वन्निर्वसिना ॥ अथ हरे नवं संस्कृतं ॥
अथ माहिकानमाभिर्दं ॥ ० ॥ संनादत्र ॥ सद्यननयमाह नि
दय ॥ चिरपूजादकिनायुजा ॥ आहूतकाय ॥ समयायक ॥
वलिद्वय ॥ ॥ अथ विवलि विधानसंयत्तसमाय ॥ ॥ ॥

संवत् १२१२ पोष्यदि ३ आदित्यवात सन्निधयकाशत्रा ॥ ॥
नीमिषय का समस्तुयमदानन वज्रसितमादावीतात वज्रसित
वज्रायाय्यथी अमयसि नमसिद्धि क्षीति युग अमयसिद्धि मति ॥



॥ ० ॥

